पर्यावरण जागरूकता एवं आर्थिक विकास

राजकिशोर धामाणी
व्याख्याता अर्थशास्त्र
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय अलवर (राज.)

शोध सारांश

हमारा यह नश्वर शरीर पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश एवं वायु से मिलकर निर्मित हुआ हैं। इन पांच तत्वों का समुचित संतुलन ही विश्व में श्रेष्ठ पर्यावरण का पर्याय है। आयुर्वेद विज्ञान में मुनि चरक ने स्वस्थ शरीर के लियें शुद्ध वायु, शुद्ध जल तथा शुद्ध मिट्टी को पर्यावरण का आवश्यक तत्व माना है। ठीक उसी प्रकार पर्यावरण से अभिप्राय उस फिजा से है जिसमे हम सांस लेते है, उस जल **से** है, जो जीवन का आधार है। ये लहलहाते पेड़ चहचहाते पक्षी, कलकल करती सरिता, शीर्ष उठाए पर्वत, विचरते पषुः यही सब है, हमारे पर्यावरण के घटक / यही है। प्रकृति के प्रति इसी आस्था, प्रेम और आदर-भाव की अभिव्यक्ति संत कबीर ने यूं की है-

'भूली मालिन पाती तोड़े, पाती पाती जीव'

जब जीवनदायी प्राणवायु (ऑक्सीजन) और प्राणपोषक शुद्ध जल ही नहीं मिलेगा, तो जीवन कैसे बच सकेगा। प्रदूषण का जनक भी मानव है और वह ही, इसका नियंत्रक भी ।

शब्द कुंजी - पर्यावरण प्रदुषण, संरक्षण, क्रियान्वयन, सरकारी नीति, ध्वनी प्रदुषण, प्लास्टिक प्रदुषण, उर्वरक, पश्चिमीकरण, पाश्चात्य तकनीक ।

प्रस्तावना - आधुनिक वैज्ञानिक युग में मनुष्य आर्थिक विकास की लालसा एवं सुख-साधनों में वृद्धि के प्रयास में पर्यावरण के समस्त अवयवों भूमि, जल, वायु, वनस्पतियों एवं अन्य प्राकृतिक संसाधनों एवं ऊर्जा के स्त्रोतों का अनियन्त्रित उपयोग एवं विदोहन कर रहा है। पर्यावरण के तेजी से हो रहे उपयोग एवं शोषण से आज विश्व को पर्यावरण असंतुलन की भीषण विभीषिका का सामना करना पड़ रहा है। पर्यावरण के अति प्रयोग एवं क्षरण की समस्या का सामना विकसित एवं विकासशील दोनों ही अर्थ व्यवस्थाओं कों करना पड़ रहा है। इन दोनों में पर्यावरण को बिगाड़ने में मात्र अंश का ही अन्तर है। विकसित देशों ने पूंजी की पर्याप्त उपलब्धता के कारण जहां पर्यावरण संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया वहीं अल्प विकसित देशों नें जनसंख्या के बड़े आकार के कारण पर्यावरण के अवयवों के अणुगत को बिगाड़ने का प्रयास किया। आज विश्व के समस्त देश एवं मनीषी पर्यावरण में हो रहे इस विघटन से चिन्तित है और इसके मौलिक स्वरूप को बनाए रखने के प्रति संजीदा दिखाई पड़ते है। पर्यावरण के संसाधनो का अनियंत्रित एवं अत्यधिक प्रयोग न हो अन्यथा इसका मौलिक स्वरूप ही नष्ट हो जाएगा इस तथ्य के परिप्रेक्ष्य मे पर्यावरण के संसाधनो के आवंटन की समस्या उत्पन्न हुई है। पर्यावरण के संसाधनों का किस क्षेत्र में कितना एवं किस सीमा तक प्रयोग किया जाए ताकि इसके क्षरण अथवा विघटन की समस्या न उत्पन्न हो। यह आज की एक ज्वलंत समस्या है एवं विचारणीय प्रश्न है। इस समस्या के समाधान से ही दारुण दुख की प्राप्ति एवं आत्म - विनाश की ओर अग्रसर मानव जाति का भला हो सकेगा तथा विलुप्त हो रही जीव जन्तुओं एवं वनस्पतियों की प्रजातियों को संरक्षित किया जा सकेगा।

पर्यावरण का उजाला- आदर्श की बात जुबान पर है, पर मन में नहीं उड़ने के लिए आकाश दिखते हैंके लिए आकाश दिखाते है, पर खड़े होने के लिए जमीन नही | दर्पण आज भी सच बोलता है पर हमने मुखौटे लगा रखे है । ग्लोबल वार्मिंग आज विश्व के सामने सबसे बड़ी समस्या है और हम पर्यावरण को **दिन** प्रतिदिन प्रदूषित करते जा रहे है। पर्यावरण के असन्तुलित एवं प्रदूषित होने की स्थितियाँ इतनी भयावह एवं डरावनी है कि कोई भी कांप उठे प्रतिवर्ष 1500

करोड़ पेड़ धरती से काट दिए जाते है मनुष्य जाति कि शुरूआत में आज तक 46 प्रतिशत जगंल व पेड़ खत्म कर दिए गए है। लगातार कम होते जंगलों के कारण आज तक तकरीबन 20 लाख लोग बेराजगार और बेंघर हो चुके है। धरती पर हर 8 वीं मौत दूषित हवा से होती है। यज्ञ का हमारे यहाँ प्राचीन काल से ही विशिष्ट महत्व रहा है। यज्ञ का न केवल आध्यात्मिक महत्व है बल्कि यज्ञ पर्यावरण के लिए भी विशेष रूप से महत्व रखता है। यज्ञ के सास्कृतिक एवं वैज्ञानिक पहलू भी है। हवन करने से पर्यावरण में उपस्थित अनेक तरह के बैक्टीरिया खत्म होते है । हवन वातावरण आक्सीजन की मात्रा को बढ़ाता है। वृक्ष इस सजीव जगत के जीवन मे रीढ़ की तरह है। पेड़ स्वयं कार्बनडाई आक्साइड का प्रयोग करते है और बदले में हमे फल फूल और आक्सीजन देते है।

उद्देश्य -

1. पर्यावरण की हो रही क्षति के बारे में जानना ।
2. पर्यावरण बचाव हेतु लोगों को जागरूक करना ।
3. सूक्ष्म कार्यक्रम आयोजित कर पर्यावरण संरक्षण के बारे में बताना।
4. उद्योग - व्यापार में पर्यावरण के महत्व जानना।
5. मानव स्वास्थ्य में पर्यावरण के महत्व को बताना ।
6. पर्यावरण से आर्थिक विकास में प्रगति को जानना।

जनभागीदारी एवं जनजागरण- पर्यावरण जनचेतना या बोध से आशय मानव के उस ज्ञान व व्यवहार से है, जिसके द्वारा मानव प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। वर्तमान में विश्व के अधिकांश विकसित तथा विकासशील राष्ट्र विश्व के प्राकृतिक संसाधनो का अविवेकपूर्ण ढंग से तीव्र विदोहन करने में लगे है, जिसके फलस्वरूप प्राकृतिक संसाधनो पर मानव का दबाव अत्यधिक बढ़ गया है। जिसके कारण पृथ्वी के बहुत से प्राकृतिक संसाधनों के पूर्णतया समाप्त होने का समय निकट आ गया है। कि प्रकृति के इन उपहारो पर केवल वर्तमान पीढ़ी काही अधिकार नहीं वरन उस भविष्य में आने वाली पीढ़ी का भी नैतिक अधिकार है। वर्तमान में मानव ने प्राकृतिक संसाधनों का तीव्र गति से विदोहन ही नहीं किया बल्कि कुछ सतत् या समाप्त न होने वाले प्राकृतिक संसाधनो जैसे - वायु, जल, मिट्टी, आदि का अविवेकपूर्ण ढंग से प्रयोग कर वातावरण गुणवत्ताओं पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। जिसके कारण स्वयं मानव जाति के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लग गया है। वर्तमान पीढ़ी का आने वाली पीढ़ी के साथ यह एक बहुत बड़ा अन्याय है कि भविष्य की आगे आने वाली मानवीय पीढ़ियों को अपने पूर्वजों से विरासत में प्राकृतिक संसाधनो से रहित पृथ्वी तो मिलेगी ही साथ ही उसे जल प्रदुषण, वायु प्रदुषण जैसी समस्याओ से भी जूझना पडेगा । पर्यावरण के इसी गंभीर संकट को दृष्टिगत रखते हुए आज समस्या समुदाय में पर्यावरण सरंक्षण के प्रति जनचेतना का जागरण हुआ है। पर्यावरण को सुरक्षित व सरक्षित रखने के लिए विश्व स्तर पर अनेक सम्मेलन गोष्ठियो का आयोजन किया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 1994 को पर्यावरण चेतना वर्ष के रूप में मनाया गया।

पर्यावरण नैतिकता - प्रमुख मुद्दे तथा संभावित समाधान वर्तमान समय में पर्यावरण के सरक्षंण एवं सुरक्षा के संबंध विश्वव्यापी जागरूकता का अनुभव किया जा रहा है। विश्व की तेजी से बढ़ती जनसंख्या नगरीकरण, औद्योगीकरण तथा तकनीकी क्रांति के कारण विश्व में पर्यावरण प्रदूषण संसाधनो का अविवेकपूर्ण, विदोहन, जगंली जैव प्रजातियों की घटती संख्या, जलवायु परिवर्तन तथा पीने योग्य जल की कमी ऐसी अनेक पर्यावरण समस्याएँ है। जिनसे पृथ्वी के समूचे जैव पर्यावरण पर खतरा उत्पन्न हो गया है। यही कारण है कि विश्वभर में पर्यावरण संरक्षण संबधी अनेक कार्यक्रमों व आन्दोलन का संचालन वर्तमान समय में हो रहा है। वस्तुतः इन कार्यक्रमों 1 व आन्दोलन का एक मात्र लक्ष्य मानव जाति को उत्तम पर्यावरण गुणवत्ता को उपलब्ध कराना रहा है। इसके साथ ही विश्व के विभिन्न देशो मे पर्यावरण प्रबंधन एवं सरंक्षण की दृष्टि से अनेक अधिनियम लागू कर रखे है । पर्यावरण नीति से संबधित प्रमुख बिन्दु निम्नलिखित है-

1. पर्यावरण के विभिन्न घटकों को प्रदूषित होने से बचाना।
2. मानव की पर्यावरण प्रदूषण से रक्षा।
3. विलुप्तशील प्रजातियो का सरंक्षण ।
4. विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं में पर्यावरण प्रबंध हेतु समन्वय बनाना।
5. विकास योजनाओं का पर्यावरण प्रभाव के दृष्टिकोण से विश्लेषण करना।
6. पर्यावरण सबंधी राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय नीति निर्धारण में सहयोग प्रदान करना।
7. पर्यावरण की गुणवत्ता बनाए रखने हेतु निरन्तर पुनरीक्षण हेतु व्यवस्था करना ।
8. पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबंधन हेतु पर्याप्त मानवीय एवं संस्थागत साधनों को जुटाना।
9. पर्यावरण चेतना जागृत करना तथा पर्यावरण शिक्षा का प्रसार करना।
10. प्रबंधन हेतु किये गये उपायों के परिणाम की सतत् जांच एवं सुधार।
11. पर्यावरण नियोजन हेतु प्रारूप तैयार करना।
12. पर्यावरण के विभिन्न पक्षो पर शोध कार्यों को बढ़ावा देना। वास्तव में पर्यावरण प्रबंधन नीति वर्तमान युग की महती आवश्यकता है। अतः इस पर समुचित ध्यान देना आवश्यक है।

पर्यावरण संरक्षण हेतु सन्देश

निष्कर्ष - मनुष्य अपने जीवित रहने एवं सुख-साधनों की वृद्धि हेतु जिन प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करता है, वे सब पर्यावरण के प्रमुख एवं महत्वपूर्ण घटक है। भूमि, जल, वायु, खनिज, वन्यजीव एवं वनस्पतियां, ऊर्जा तथा ताप आदि एवं समस्त जैव एवं अजैव तत्व मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते है। विकसित देशों ने इन तत्वों को चरम सीमा तक प्रयोग किया है, जबकि प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता वाले कतिपय अल्पविकसित देशों ने अपने पर्यावरणीय संसाधनो का एक अंश ही विदोहन है। उल्लेखनीय है कि विश्व के देशों में कतिपय प्राकृतिक संसाधनों का वितरण भी समान नहीं है। किसी देश में खनिजों के विपुल भण्डार है, तो कहीं जल संसाधन की प्रचुरता है। इन संसाधनों के बल पर ही इन देशों ने पर्याप्त प्रगति की है। जापान के 70 प्रतिशत वन तथा कनाडा के 46 प्रतिशत वन क्षेत्र ने इन देशों को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अरब देशों में उपलब्ध खनिज तेलों के विपुल भण्डार ने इन देशों का धनवान राष्ट्रों की श्रेणी में खड़ा कर दिया है। इसी तरह दक्षिणी अमेरिका की अमेजन नदी तथा अफ्रीका **की नील नदी** ने अपने **किनारे** बसने वाले लोगों **का** समृद्धशाली बनाया है।

विभिन्न देशों को समृद्धशाली बनाने वाले प्रकृति के निःशुल्क उपहार इन प्राकृतिक संसाधनों को इस तरह उपयोग किए गजाने **की** आवश्यकता है ताकि पर्यावरण का संतुलन बना रहे तथा इसमें क्षरण अथवा विघटन की समस्या न उत्पन्न हों। इस दृष्टि से पर्यावरण के विभिन्न अवयवों जैविक एवं अजैविक तत्वों की संरक्षा, सुरक्षा एवं संरक्षण की आवश्यकता है।

सुझाव - पर्यावरण संरक्षण बेहतर जीवन के लिए आवश्यक है। पर्यावरण मनुष्य को शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ प्रदान कर सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास के लिए अभिप्रेरित करता है। अत: आर्थिक विकास एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु सुझाव इस प्रकार है-

1. भारतीय संस्कृति के संरक्षण हेतु युवा पीढ़ी को जागृत किया जागृत किया किया जाए।

2. प्राथमिक शिक्षा में भारतीय संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों का समावेश किया जाना चाहिए।

3. जन जागृति द्वारा पर्यावरण सहजने हेतु लोगों की मनोवृत्ति बनाना आवश्यक है।

4. पर्यावरणीय संसाधनों का दोहन उस सीमा तक किया जाए जिस **सीमा** तक उनमें प्राकृतिक रूप से वृद्धि होती है।

5. 'पेड़ अधिक और मानव कम' की धारणा को सार्थक बनाना होगा।

6. अधिक उपभोग की संस्कृति का त्याग कर वस्तुओं का उपभोग हिफाजत से किया जाना चाहिए जिससे प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव कम हों।

7. औद्योगिक संस्थाओं में वायु प्रदूषण संरक्षण अधिनियम का कठोरता से पालन किया जाना चाहिए तथा पालन न करने पर कठोर दंड की व्यवस्था **होना** चाहिए।

8. पुनः उत्पादनीय ऊर्जा तकनीक का अधिक उपयोग किया जाना चाहिए।

9. विकास योजनाओं का पर्यावरणीय प्रभाव के दृष्टिकोण से विश्लेषण कर उन्हें सही ढंग से क्रियान्वित किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. विकास और पर्यावरण का अर्थशास्त्र - डॉ. माया राठी एवं डॉ. जमा - म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल 2016
2. पर्यावरणीय अध्ययन - प्रोफेसर त्रिभुवन नाथ शुक्ल - म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल 2016
3. विकास और पर्यावरण का अर्थशास्त्र - डॉ. जे. पी. मिश्रा – साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा |
4. सामान्य ज्ञान - आनन्द कुमार पाण्डेय एवं अर्चना पाण्डेय - म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल 2016
5. समाचार पत्र दैनिक जागरण 6 फरवरी 2016
6. राष्ट्रीय शोध सेमीनार बड़वानी 9, 10 सितम्बर 2016